www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 44
सृष्टि संवत् 1960853117
29 जनवरी, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–73, अंक : 44, 26-29 जनवरी 2017 तदनुसार 16 माघ सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

POSTAGE MAIL BUSINESS 7 JAN 2017 JALANDHAR CITY

उत्तम चाल चल

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अपक्रामन्पौरुषेयाद् वृणानो दैव्यं वच :।
प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह।।

-अथर्व० ७।१०५।१

शब्दार्थ-पौरुषेयात् = पुरुष-सम्बन्धी [वचन] से **अपक्रामन्** = दूर भागता हुआ [और] **दैव्यम्** = देवप्रणीत **वच :** वचन को **वृणान :** = वरण करता हुआ, अपनाता हुआ तू **विश्वेभिः** = सम्पूर्ण **सखिभिः** = सखाओं के सह = साथ **प्रणीती :** = उत्तम चालों को **अभ्यावर्तस्व** = सब ओर से बर्ताव में ला।

व्याख्या-मनुष्य-जीवन का उद्देश्य क्या है, इस विषय में बहुत थोड़े मनुष्य संसार में सतर्क हैं। मनुष्यों की बहुत अधिक संख्या तो अपने लक्ष्य के विषय में कुछ जानती ही नहीं। खाना, पीना, पहनना, भोग भोगना-यही उनके लिए मनुष्य-जीवन का परम लक्ष्य है, परन्तु यह तो कीट-पतङ्ग, पशु-पक्षी आदि को भी प्राप्त है ? क्या मनुष्य की विशेषता (ज्ञान) केवल इन पशुवृत्तियों की तृप्ति के लिए मनुष्य को मिली है ? यदि मनुष्य-जीवन का लक्ष्य कुछ अन्य ही है, तो उसका उपदेश भी कहीं होगा। मनुष्यों की अधिकांशता क्या वाणी से और क्या कार्य से भोग सामग्री जुटाने को ही मनुष्य-जीवन की सिद्धि समझ रही है। भगवान् ने मनुष्य को उसकी उत्पत्ति के साथ ज्ञान भी दिया था। उस ज्ञान को वेद कहते हैं। वेद के शब्दों में उसे **'दैव्यं वचः'** भी कहते हैं। वेद कहता है-**'अपक्रामन् पौरुषेयाद् वृणानो दैव्यं वचः'** = पौरुषेय वचन से दूर हटकर दैव्य वचन का वरण कर।

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य, उद्देश्य-सिद्धि के साधन सभी **'दैव्यं वचः'** = वेद में उक्त हैं। उसको अपना ! महान्-से-महान् विद्वान् भी मनुष्य-जीवन की इतिकर्त्तव्यता का पूर्ण ज्ञान नहीं दे सकता, अतः भगवान् ने सृष्टि के आरम्भ में सर्व मनुष्यों के कल्याणार्थ वेदवाणी का उपदेश किया। वेद-ज्ञान सब प्रकार के अज्ञान तथा उससे होने वाले पाशों का विनाश करता है-**'उत् त्वा निऋत्याः पाशेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि'** [अथर्व० ८।१।३]-दैवी वाक् द्वारा पाप के पाशों से हम तेरा उद्धार करते हैं। वेद में इस दैवी वाक् को **'कल्याणी वाणी'** (यजुः० २६।२) भी कहा गया है। इसको अपनाने का अर्थ है-**'प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह'** = सम्पूर्ण मित्रों के साथ उत्तम चालों को सब ओर से बर्ताव में ला।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। कोई एक मनुष्य दूसरों से सहायता-प्रत्यक्ष या परोक्ष में-लिये बिना अपनी शरीर-यात्रा नहीं चला सकता। यही परमुखापेक्षिता समाज-निर्माण का मूल कारण है। समाज को सुचारुरूप से चलाने के लिए विशेष व्यवस्थाओं का विधान करना पड़ता है। वेद का आदेश है कि हे मनुष्य ! तू सब सखाओं= अपने-जैसों के साथ प्रणीति = उत्तम चाल चल, अर्थात् ऋजुमार्ग से चलकर अपनी उन्नति करने वालों के साथ वैर-विरोध तथा कुटिलता का व्यवहार न कर।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

गुरू विरजानन्द जी द्वारा शिष्य दयानन्द से समावर्तन पर अदभुत गुरू दक्षिणा मांगना

-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

अदभुत चिन्तन ऋषि विरजानन्द जी का

ईश्वर की सृष्टि में जब ऋत: सत्य का सन्तुलन डगमगाने लगता है, तभी ऋत: सत्य का सन्तुलन बनाने के लिये ईश्वरीय व्यवस्थानुसार इस धरती पर विलक्षण महापुरूषों का जन्म होता है। ऐसे ही दो महापुरूषों का भारत में इस युग में जन्म हुआ था, एक महर्षि विरजानन्द सरस्वती जी और दूसरे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हुए है। ऐसा निम्न चिन्तन क्रान्त दर्शी देवता की आत्मा में ही आ सकता है।

विलक्षण गुरू दक्षिणा मांगना

महापुरूषों का कार्य संसार को ऋत सत्य की ओर मोडना होता है। गुरू विरजानन्द जी का मानवों को सुखी करने का चिन्तन सर्व प्रथम यह था कि भारत की गुलामी के निम्न कारण है और संसार को इसका ज्ञान कराना आवश्यक है। संसार सर्व शक्तिमान ईश्वर को भूलता जा रहा है और उसकी जगह मनुष्य रूपी तथा कथित भगवानों की पूजा कर रहा है। ईश्वरीय वाणी वेदों को भूल कर अनेक पाखण्डों में फंस गया है, वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक अलग-अलग मतों को स्थापित करके उसको धर्म कह कर सामान्य जनता को भटका रहा है। ऋषियों द्वारा आर्ष ग्रन्थो को न मान कर अनार्ष ग्रन्थों को मान कर संसार को भ्रमित कर रहा है। समाजिक अन्धविश्वासों में नारी को पढ़ने का अधिकार नहीं है शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं है। जाति-पाति छूआ-छूत का प्रचार करना आदि अनेक सामाजिक कुरीतियों द्वारा समाज का पथ भ्रष्ट करना। वीरों व राजाओं को सत्य शास्त्र व शस्त्र विद्या का मार्ग न बताकर मूर्ति की पूजा करके राष्ट्र रक्षा करने की शिक्षा न देना, तथा अनेक धार्मिक अन्धविश्वासों के मानने वा मनवाने से हमारा राष्ट्र भारत वर्ष सदियों से आन्तिरक व विदेशियों का गुलाम हो रखा है। **जाओ दयानन्द इन बुराइयों से देश को स्वतन्त्र कराओ त्र बचाओ, यही मेरी गुरू दक्षिणा होगी।**

ऋषि विरजानन्द का संक्षिप्त जीवन परिचय

गुरू विरजानन्द जी का जन्म 1779 में पंजाब के करतारपुर के निकट ग्राम गंगापुर में हुआ था। पांच वर्ष की अल्प आयु में ये चेचक के कारण नेत्र दृष्टि से हीन हो गये थे। और तेरह वर्ष की आयु में माता-पिता की छत्र-छाया से भी वंचित हो गये थे। इन सभी बाधाओं के होते हुए भी उन्होने साहस और धैर्य का पल्लू नहीं छोड़ा और अपने युग के संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान बने।

अष्ठाध्यायी अध्ययन का पुन: उद्धार करने और आर्ष पद्धति का आविष्कार करके इतिहास में अपना स्थान बनाया। वे राष्ट्र भक्ति निर्भयता और आत्मसम्मान व आर्ष पद्धति के दिव्य मूर्ति थे। उन्होंने युगों के पश्चात वेदों को स्वत: प्रमाण घोषित किया, और निरूक्त, शास्त्र, महाभाष्य, अटाध्यायी के माध्यम से वेदों के ईश्वर परक अर्थ बताये और विश्व को महर्षि दयानन्द जैसा महान शिष्य दिया। जिन्होंने आगे चलकर 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। और दयानन्द जी ने भारत की प्रसुप्त आत्मा को जगाया और मानव जाति को वेदों का संदेश दिया। ऋषि विरजानन्द जी ने संसार को आर्ष व अनार्ष सहित्य का ज्ञान का उपदेश देकर बृहद कल्याण किया जो आगे चलकर सामाजिक जगत में अमूल परिवर्तन का कारण सिद्ध हुआ।

महर्षि दयानन्द जी का संक्षिप्त परिचय व कार्य

ऋषि दयानन्द का जन्म (1824-1883 ईसवी) में भारत के कठियावाड प्रान्त के मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम में हुआ था। पिता का नाम कर्सन जी लाल जी त्रिवेदी था। वे औदीच्य ब्राह्मण थे। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था, संन्यास लेने के बाद उनका नाम दयानन्द हुआ 14 वर्ष की आयु में यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था-एक दिन शिवरात्री के पर्व पर शिव की मूर्ति के सामने उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी। शिव के दर्शन तो क्या होने थे, उन्होंने देखा कि चूहे बिलों से निकल आये और मूर्ति पर चढ़े नैवेद्य को खाने लगे। यह देख मूलशंकर के हृदय में जिज्ञसासा उत्पन्न हुई ये कैसे देवता है जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं उनकी इस शंका का समाधान कोई न कर सका। यही कारण है उन्होंने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया।

ऋषि दयानन्द जी ने अनेक ग्रन्थ लिखे उनका मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। उन्होंने सामाजिक विचार धारा को क्रियात्मक रूप देने के लिये 10 अप्रैल 1875 में बम्बई के एक मोहल्ले गिरगांव में आर्य समाज की स्थापना की आर्य समाज अपने जन्म काल से आज तक समाजिक, धार्मिक तमाम बुराइयों को मिटाने के लिये चट्टान की तरह खड़ा है और आगे भी रहेगा। उन्होंने संसार का कल्याण के लिये सत्यार्थ प्रकाश अमर ग्रन्थ की रचना की।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में महर्षि दयानन्द के विचार

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतो में हैं, वे पक्षपात छोड़ कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बाते सबके अनुकूल सब में सत्य है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरूद्ध बाते है, उनका त्याग कर परस्पर प्रगति से वर्ते-वर्तायें जो जगत का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानो में विरोध बढ़कर अनके विधि दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है सब मनुष्यों को दुख सागर में डुबा दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में घर प्रवृत होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने पर तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते है परन्तु-**सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयान:**

सवर्दा सत्य का विजय और उसत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानो का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्ब से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी नहीं सत्यार्थ प्रकाश करने से हटते।

सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्ध: अनुभूमिका (1) से

मनुष्य जन्म का होना सत्या सत्य के निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मतमतान्तर के विवाद से जगत में जो-जो अनिष्ट फल हुए होते है, और होंगे उनकी पक्षपात रहित विद्वतजन जान सकते हैं जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्य का आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वतजन ईष्या द्वेष छोड़ सत्या सत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहे तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चित है कि इस विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फंसा रखा हैं यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें।

महर्षि दयानन्द जी के देवत्व कार्य-शिष्य हो तो ऐसा हो

1. वेदों के रूढ़ी अर्थों पर प्रहार कर निरूक्त शास्त्र के अनुसार ईश्वर परक अर्थ बताए। 2. रूढ़ीवाद पर प्रहार कर प्रत्येक क्षेत्र में रूढ़ीवाद को तिलाञ्जलि देने का नारा लगाया। 3. सामाजिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार करके हिन्दु धर्म को रखते हुए उसके अन्दर से काया पलटने का कार्य किया। 4. राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार करे कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। 5. समाजवादी विचार धारा पर प्रहार करके जाति-पाति, छुआ-छूत, उंच-नीच सामाजिक कुरीति बताया। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में ही समाजवाद प्राप्त होना, आदि।

महर्षि दयानन्द जी भारत के 19वीं शताब्दि के सबसे महान सामाजिक विचारक थे उनकी छाप आने वाले सब विचारकों पर पड़ी। उन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचारों से युग में परिवर्तन कर दिया, आज जो हम स्वतन्त्रता एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों के व्यापक अर्थ-अनर्थ को सोच समझ रहे है सब उनकी देन है, और इन विचारों को चिर स्थाई रखने के लिये अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा और आर्य समाज का गठन कर दिया महर्षि विरजानन्द जी एवं ऋषि दयानन्द जी के हम सदैव ऋणी रहेंगे।

आज की आवश्यकता

संसार के सभी धर्माचार्यों को सत्य और सर्व हितकारी विषयों में एक मत होकर धर्मोपदेश करना चाहिए। आर्य समाज संगठन संसार के धर्माचार्यों का आवाहन करता है कि आइए हमारे साथ मिलकर जगत का उपकार करें।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

गणतन्त्र दिवस -26 जनवरी

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी अर्थात् जन्म देने वाली माता और जिस भूमि पर हमने जन्म लिया है उनका सुख स्वर्ग के सुख से भी बढ़कर है। वो हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश के प्रति अपनी मातृभूमि के प्रति प्यार और समर्पण की भावना नहीं है। इतने त्याग और संघर्ष के बाद हमने आजादी को प्राप्त किया है उस आजादी की हम क्या कीमत समझते हैं? उसका बोध कराने के लिए हर वर्ष 26 जनवरी के रूप में गणतन्त्र दिवस आता है। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतन्त्र राज्य घोषित किया गया था। तब से लेकर हम इस दिन को सारे भारत वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन से भारत वर्ष ने गुलामी से मुक्त होकर नया जीवन जीना शुरू किया था और साथ ही लोकतान्त्रिक गणराज्य की नींव रखी गई थी। भारत के लोगों ने चिरकाल की गुलामी के बाद सुख की सांस ली थी। इस दिवस को मनाने का अर्थ है कि हम देशवासी अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र की एकता, अखण्ड़ता एवं उन्नति के लिए कार्य करें।

हमारे देश भारतवर्ष पर कई वर्षों तक मुसलमानों ने शासन किया, हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया और फिर सैंकड़ों वर्ष अंग्रेजों के अधीन रह कर दु:खों और कष्टों को प्राप्त किया। परन्तु पराधीनता में सुख कहां? इस बात को हमारे देश के विचारकों, बुद्धिजीवियों और देशभक्त नवयुवकों ने महसूस किया और आजादी के लिए संघर्ष करना आरम्भ कर दिया। 1857 से लेकर 1947 तक तो यह संघर्ष लगातार चलता रहा। हमारे देश के अनेक क्रान्तिकारियों और नौजवानों ने अपना बलिदान दिया। उस बलिदान के फलस्वरूप हम 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन हो गए और अंग्रेजों को विवश होकर यहां से जाना पड़ा। इस आन्दोलन में आर्य समाज ने अपनी महती भूमिका निभाई।

इस आजादी के लिए अनेकों माताओं ने अपने बेटे दिए, अनेकों पत्नियों ने अपने पति दिए और अनेकों बहनों ने अपने भाई दिए। देश के वीर जवानों ने अपना रक्त बहाकर यह स्वाधीनता प्राप्त की थी। यह आजादी की लड़ाई किसी राजा ने नहीं लड़ी थी। उस समय भारत में कई राजा थे परन्तु वह भी अंग्रेजों के गुलाम बने हुए थे। उन्होंने भी इस आजादी की लड़ाई के लिए कोई योगदान नहीं दिया था। देश की सारी जनता ने अपना खून पसीना एक करके इस आजादी को पाया था। इस आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का भी कम योगदान नहीं था। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सबसे प्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया था और भारतीय जनता में देश प्रेम का शंखनाद चारों ओर गुंजाया था। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में भी महर्षि दयानन्द की प्रेरणा कार्य कर रही थी। स्वामी दयानन्द ने स्थान-स्थान पर घूम कर क्रान्ति का शंखनाद किया था। इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों का संगठन करने वाले महान् क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी स्वामी दयानन्द का आशीर्वाद प्राप्त था। उन्हीं की प्रेरणा से वह वहां गए थे और उनके नेतृत्व में इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों ने महान् कार्य किए थे जिससे अंग्रेज सरकार घबरा उठी थी। उधम सिंह ने भरी सभा में अंग्रेज को अपनी गोली का निशाना बनाकर अपनी वीरता का परिचय दिया था। भारत में भी क्रान्तिकारी संगठनों की स्थान-स्थान पर स्थापना हो चुकी थी। राम प्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्र शेखर आजाद, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द और अनेकों क्रान्तिकारियों ने इस आजादी की लड़ाई के लिए अपना तन-मन-धन न्योछावर किया था। इस आजादी की लड़ाई को बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों ने लड़ा था। सभी मत सम्प्रदायों के लोगों ने संगठित होकर इस आजादी की लड़ाई में अपना-अपना योगदान दिया था। उसी के परिणामस्वरूप हमारा देश आजाद हुआ। भारत आजाद होने पर प्रश्न पैदा हुआ कि देश की शासन प्रणाली कैसी हो? इसलिए देश के नेताओं ने मिल कर निर्णय लिया कि अब देश में रजवाड़े शाही नहीं चलेगी। जिस देश की स्वाधीनता एक लम्बे समय तक संघर्ष करके उस देश की जनता ने प्राप्त की है, उस देश में शासन भी जनता का ही होना चाहिए। इसलिए गणतन्त्रीय शासन प्रणाली की व्यवस्था की गई और 26 जनवरी 1950 को उसकी विधिवत घोषणा कर दी गई। इस घोषणा के बाद छोटे बड़े सभी राजाओं को तिरंगे झण्ड़े के नीचे आना पड़ा और सभी पर भारतीय संविधान जो इस दिन घोषित किया गया था लागू कर दिया गया।

आज उस दिन को पूरा हुए 67 वर्ष हो गए हैं। हम बड़े गर्व से कह सकते हैं कि हम न केवल स्वाधीन हैं बल्कि आज हमारे देश में प्रजा का अपना शासन है। आज प्रजा की वोटों से ही नेता चुने जाते हैं। यह ठीक है कि आज वोटों के जोर पर कई गलत व्यक्ति भी चुन कर आगे आ जाते हैं जिससे देश का अहित भी होता है परन्तु अगर जनता सावधान होकर अपने वोट का प्रयोग करें तो अच्छे और चरित्रवान् लोगों को आगे आ सकते हैं जो राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं। जनता का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे लोगों को चुनकर संसद और विधानसभाओं में भेजे जो चरित्रवान हों, राष्ट्रभक्त हों तथा जिनके अन्दर राष्ट्र का विकास करने की क्षमता हो। ऐसे नेताओं का चयन करें जो निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर जनसेवा के कार्यों को प्रमुखता दे। धनबल और बाहुबल के द्वारा जो लोग सत्ता को प्राप्त करते हैं, वे अपने स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरूपयोग करते हैं। ऐसे स्वार्थी और चरित्रहीन नेताओं के कारण राष्ट्र का अहित होता है। ऐसे लोगों का उद्देश्य सिर्फ सत्ता प्राप्त करना होता है। उनके लिए राष्ट्रहित कोई महत्व नहीं रखता।

26 जनवरी के दिन को हम राष्ट्रीय स्तर पर गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। इस दिन हम सभी राष्ट्रवासी चिन्तन करें कि राष्ट्र के लिए हमारा क्या कर्त्तव्य है। जब तक हम चिन्तन नहीं करेंगे, अपने मत का सही उपयोग नहीं करते तब तक सुशासन और श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते। हमें यह स्मरण रखना होगा कि हमारे पास लोकतन्त्र की सबसे बड़ी ताकत के रूप में मताधिकार प्राप्त है। अगर हम चाहें तो स्वार्थी, भ्रष्ट नेताओं को सत्ता के सुख से वंचित रख सकते है। ऐसे लोगों का चयन कर सकते हैं जिनके लिए देशहित सर्वोपरि हो। केवल गणतन्त्र दिवस मना लेने से हम अपने उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। आज आवश्यकता है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्रहित के बारे में चिन्तन करें। जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा, अपने मताधिकार का सही प्रयोग करेगा तभी गणतन्त्र दिवस मनाना सार्थक होगा।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द सरस्वती

-ले० शिव नारायण उपाध्याय-कोटा

उन्नीसवीं सदी में जन्म लेने वाले महापुरूषों में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान सर्वोच्च है। जन्म से वे शैव थे। शिव के प्रति उनमें बड़ी श्रद्धा तथा निष्ठा थी। परन्तु जब शिव रात्रि के पावन पर्व पर मध्यरात्रि को एक मूषक को शिव की मूर्ति पर चढ़ते और शिव को चढ़ाये गये प्रसाद को खाते हुए देखा तो वे यह सोचने को बाध्य हो गये कि जो शिव अपनी ही रक्षा एक सामान्य चूहे से नहीं कर सकता वह अपने भक्तों की रक्षा क्यों कर सकेगा। वास्तव में यह सच्चा शिव नहीं है मैं सच्चे शिव की खोज करूंगा। इसी खोज में 21 वर्ष की आयु में वे घर छोड़ कर निकल पड़े। नर्मदा तट, गंगा और यनुना तट पर विचरण करते हुए कई योगियों से मिले योग विद्या सीखी, विद्वानों से मिल कर संस्कृत व्याकरण तथा शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। सभी धर्म ग्रन्थों का मनोयोग पूर्वक अध्ययन किया परन्तु सच्चे शिव का पता न लगा सके। इस प्रकार लगभग 16-17 वर्ष तक भटकने के पश्चात् पता चला कि मथुरा में स्वामी विरजानन्द सरम्वती विराजते हैं। स्वामी विरजानन्द उन्हें सच्चे शिव का दर्शन करा सकते हैं। वे तुरन्त मथुरा पहुँच कर स्वामी विरजानन्द सरस्वती जो जन्मान्ध थे उनकी कुटिया पर गये और अपने आने का उद्देश्य उन्हें बताया। स्वामी विरजानन्द सरस्वती ने उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार किया और चार वर्ष के अध्यापन के अन्दर ही उन्हें वेदों का पारंगत विद्वान बना दिया, अविद्या अन्धकार से हटा कर उन्हें सच्चे शिव परमात्मा का ज्ञान दिया तथा गुरू दक्षिणा में उनसे जीवन भर वेद के सत्य सनातन धर्म के प्रचार में संलग्न रहने की, प्रतिज्ञा करा ली।

सन् 1864 से ही जब वे 40 वर्ष की अवस्था के थे सन् 1883 ई. मृत्यु पर्यन्त वे अहर्निश वेद के प्रचार-प्रसार में निरत रहे। उनकी मान्यता थी कि वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

अत: जब तक संसार में वेद का प्रचार-प्रसार नहीं होगा तब तक मनुष्यों को अविद्या अन्धकार से छुटकारा नहीं मिलेगा। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि मध्य-काल में वेदों पर जो कार्य किया गया है वह आक्षेप जनक तथा अश्लील है अत: वेद का निरूक्त निघन्टु के आधार पर नये सिरे से भाष्य किया जाना आवश्यक है और इस कार्य को सम्पन्न करने का बीड़ा स्वयं उन्होंने उठाया। सबसे पहले उन्होंने ऋग्वेदि भाष्य भूमिका लिखकर अपना मन्तव्य प्रकट किया कि वे किस प्रकार का भाष्य करने वाले हैं। इसकी विद्वानों द्वारा बड़ी प्रशंसा हुई। फिर नियमित रूप से वेद पर कार्य करते रहे। परन्तु उनका उद्देश्य अब केवल वेद का भाष्य करना ही नहीं रह गया था। वे अपने देश भ्रमण में देश की वास्तविक स्थिति जान गये थे। उन्होंने देख लिया था कि अशिक्षा के कारण देश अंध विश्वासों और कुरीतियों का पिटारा बन गया है। निर्धनता ने देश को अपने अधिकार में लिया हुआ है। विधर्मी लोग लगातार हिन्दू जाति का धर्मान्तरण कर रहे है। विदेशी सरकार ने देश के उद्योग धन्धों को समाप्त कर देश में बेरोजगारी फैला दी है और पूरे देश को इंग्लैण्ड से बनी वस्तुओं से ढक दिया है। स्त्रियों की दशा सबसे अधिक शोचनीच है। अत: जब तक इन समस्याओं का हल नहीं होगा तब तक सच्चे वैदिक धर्म का भी प्रचार-प्रसार असंभव है। समस्याओं का निराकरण करने के प्रयास में उन्होंने देश में घूम-घूम सच्चे वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए अपने भक्तों को शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप शिक्षा संस्थाएं प्रारम्भ होने लगी। स्त्री शिक्षा को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला। देश में पहली बार कन्याओं को विद्यालयों में जाने का अवसर मिला। वेद के पठन पाठन हेतु गुरूकुल स्थापित करने का कार्य भी प्रारम्भ हुआ। इसी मध्य 16 दिसम्बर 1872 को स्वामी जी बंगाल की यात्रा पर पहुँचे तथा लगभग 4 माह तक बंगाल का भ्रमण करते हुए स्थान-स्थान पर वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए, प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और विद्वानों से मिलते हुए बिहार की तरफ लोटे। बंगाल भ्रमण से उन्हें दो लाभ हुए। पहला लाभ यह हुआ कि केवल संस्कृत एवं गुजराती भाषा के बल पर वह सम्पूर्ण देश में अपने विचारों का प्रकाश नहीं फैला सकेंगे। इसके लिये देश के अधिकांश भागों में बोली और समझी जाने वाली भाषा हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है। दूसरा सार्वजनिक जीवन में आने पर पूर्ण वस्त्रों का धारण करना भी आवश्यक है। उन्होंने तुरन्त केवल लंगोट लगा कर रहना बन्द कर दिया तथा पूर्ण वस्त्र धारण कर लिये तथा हिन्दी भाषा बोलना और लिखना भी थोड़े ही समय में सीख लिया। मुरादाबाद के राजा जयकृष्ण दास की सलाह पर अपने विचारों को स्थाई रखने की दृष्टि से हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश लिखा फिर संस्कृति के विकास की दृष्टि से संस्कार विधि लिखी। फिर स्वामी जी के विरोध में जहाँ-जहाँ भी विरोधियों ने पर्चे छपवा कर वितरीत किये उनके उत्तर देते हुए पुस्तकें लिखने लगे। अपने जीवन काल में उन्होंने छोटी-बड़ी लगभग 60 पुस्तकें लिखी। बम्बई प्रवास के समय 7 अप्रैल 1875 को अपने विचारों को लगातार प्रचारित प्रसारित हेतु आर्य समाज की स्थापना की। साथ ही देश के कृषि प्रधान होने के कारण गाय के महत्व को जान कर गौ वध बन्ध कराने हेतु एक प्रार्थना पत्र लिखकर देश भर से लाखों लोगों के उस पर सहमति सूचक हस्ताक्षर कराये परन्तु अन्य कार्यों में अधिक व्यस्त होने के कारण तथा मृत्यु द्वारा शीघ्र घेर लिये जाने के कारण यह प्रार्थना पत्र महारानी के पास नहीं भेजा जा सका।

देश में फैल रही बेरोजगारी दूर करने के लिये तथा देश में विभिन्न उद्योगों को स्थापित करने के लिये जर्मनी के एक वैज्ञानिक प्रो. जी वाइज से पत्र व्यवहार किया। छ: माह तक पत्र व्यवहार चला परन्तु आर्थिक कठिनाई के कारण यहाँ से लोगों को औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु जर्मनी भेजा जाना संभव नहीं हो सका। लाहोर में स्थानीय व्यक्तियों की सलाह से तकनीकी शिक्षण संस्था प्रारम्भ करने का तय हुआ परन्तु वह भी आपके जीवनकाल में संभव नहीं हो सका। वेद भाष्य का कार्य भी चल रहा था। समय-समय पर कई छोटी बड़ी पुस्तकें भी लिखी जा रही थी। इनके सुव्यवस्थित प्रकाशन के लिये एक निजी प्रेस की स्वामी जी ने आवश्यकता अनुभव की। आर्य समाज मेरठ ने इस पर आर्थिक सहमति व्यक्त की आर्य समाज फर्रूखावाद ने भी इसमें आर्थिक सहयोग दिया राजा जयकृष्णदास ने भी इसमें आर्थिक सहयोग दिया फलस्वरूप 12 फरवरी 1880 गुरूवार को लक्ष्मीकुण्ड स्थित विजय नगराधिपति के उद्यान की छत पर वैदिक यन्त्रालय की स्थापना की गई और मुंशी बख्तावर सिंह को प्रेस का प्रबन्धकर्ता नियुक्त किया गया। इसी मध्य मुम्बई की यात्रा के अवसर पर 7 अप्रैल 1875 को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी। आर्य समाज के 28 नियम यहाँ स्वीकार किये गये परन्तु बाद में लाहोर आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर लोगों के आग्रह पर आर्य समाज के 10 नियमों की रचना की। वेद भाष्य का कार्य भी निरन्तर चलता रहा। स्वामी जी का भाष्य तर्क पूर्ण, विज्ञान का अविरोधी तथा सब प्रकार के आक्षेपों से रहित हुआ। स्वामी जी ने वेद भाष्य में वे तथ्य भी दिये जो वैज्ञानिकों ने उनके लेखों के 30-35 वर्ष पश्चात् घोषित किये। उदाहरणार्थ स्वामी जी ने ऋग्वेद मण्डल सूक्त 164, मन्त्र 19 में सापेक्षता के विषय में तथा ऋग्वेद मण्डल 2 सूक्त, 16 मन्त्र दो में पदार्थ और उर्जा के विषय में जो कुछ लिखा, वहीं

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

कुछ सवाल-जवाब (चौथी किश्त)

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम स्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

प्रश्न 12. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता हूँ-

1. आपकी व्यवस्था में पाप-पुण्य कर्मों के बराबर होने पर ही मानव चोला दिया जाता है। फिर उत्तम, मध्यम, निम्न स्तरीय मानवों का वर्गीकरण, पाप-पुण्य की न्यूनता या अधिकता के आधार पर किया जाना बेमानी-अर्थहीन लगता है। मानव की जो आर्थिक-सामाजिक स्थिति है उसके औचित्य को सिद्ध करने का षड़यंत्र मुझे लगता है। यह स्थिति भारत ही नहीं विश्व के समस्त मानवों की है।

2. एक बार मानव जीवन मिलने पर, कर्मफल व्यवस्था के पालन में वह जीवन-मरण के चक्र में पड़ता है इसीलिये जीवात्मा को प्रवाह से अनादि मानते हैं। केवल मोक्ष अवस्था में ही जीव और आत्मा का पृथक्करण होता है, अन्यथा नहीं। यह स्थिति सृष्टि उत्पत्ति से लेकर प्रलय काल तक चलती है।

3. मृत्यु होने पर-प्राण वायु निकलने पर आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ-श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना और स्पर्श तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ-हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ तथा पाँच तन्मात्राएँ-शब्द, रूप रस, गंध और स्पर्श तथा बुद्धि और मन ये सत्रह तत्व भी जाते हैं। और संचित कर्म भी, ऐसा विद्वानों का अभिमत है। ये तत्व-कर्मयोनि और भोग योनि का प्राणी होने से मानव शरीर में ही जा सकते हैं। इनके होते हुए जीवात्मा का ट्रांसफर पेड़-पौधों, पशु-पक्षी में नहीं हो सकता।

4. आपकी सृष्टि रचना ऋत नियमों से बंधी है। आप भी इन नियमों से बंधे हैं। प्राय: प्रवचनकार उदाहरण देते हैं कि आप दूसरा ईश्वर नहीं बना सकते। इसी प्रकार बिना गुण सूत्रों का परिवर्तन किए मानवीय जीवात्मा का स्थानांतरण पशु-पक्षी, पेड़-पौधे में नहीं किया जा सकता है। कर्मफल व्यवस्था के नाम पर भी नहीं। मानवीय जीवन में ही इतने दारुण, वीभत्स अकल्पित दण्ड पाए व्यक्ति मिल जाते हैं, क्या उनसे भी दारुण कष्ट भोग योनि में भेजे जाने पर हो सकता है ? मेरे लिए मानना नामुमकिन है। यह आपकी व्यवस्था नहीं हो सकती। शास्त्राकारों का भाष्य दोषपूर्ण है या वे आपके मन्तव्य को समझ ही नहीं पाए।

अब जरा जन्म-मरण की चर्चा की जावे। पहले जन्म की करते हैं।

नर और नारी दोनों चेतन हैं, दोनों जीवात्मा हैं। प्राण-वायु के निकलने पर या मृत्यु होने पर दोनों की जीवात्मा, सूक्ष्म-शरीर और संचित कर्म सहित दूसरे जन्म की खोज में निकल जाती हैं।

नर-नारी के संयोग से जीव जन्म लेता है। नर के वीर्य में करोड़ों शुक्राणु होते हैं और नारी के अण्डाणु में करोड़ों अण्डाणु रहते हैं। यौन प्रक्रिया के अन्तर्गत, सामान्यत: एक शुक्राणु एक अण्डाणु का फ्यूजन-भेदन कर पाता है और इससे नारी गर्भ धारण करती है। वीर्य के करोड़ों शुक्राणु जिनमें आत्मा मानी जाती है, नष्ट हो जाते हैं। वैसे ही प्रत्येक शुक्राणु जीवन धारण कराने में समर्थ होता है। जीव विज्ञानियों ने टेस्टट्यूब बेबी उत्पन्न करके यह सिद्ध कर दिया है। पुरुष के शुक्राणु में आत्मा और नारी को बीजारोपण हेतु क्षेत्र (खेत) मानना बुद्धिसंगत प्रतीत नहीं होता। नर के शुक्राणु में x और y क्रोमोसोम गुण सूत्र होते हैं और नारी के डिम्बाणु में केवल x क्रोमोसोम होता है। प्यूजन के समय यदि पुरुष शक्राणु का x नारी डिम्बाणु के x से मिलता है तो कन्या का जन्म होता है और यदि पुरुष शुक्राणु का y क्रोमोसोम नारी के x क्रोमोसोम से संयोग करता है तो पुत्र का जन्म होता है।

इस स्थिति में किसके कर्मफलों का भोग नवीन जीवन धारण करने वाली जीवात्मा करती है-

क्या केवल पुरुष के ?

क्या केवल नारी के ?

या संयुक्त रूप से दोनों के ?

इस विषय में वेद क्या कहता है ?

इसी सन्दर्भ के अन्तर्गत गर्भधारण की सर्वज्ञात विकृतियों की ओर ध्यान दिला कर जानना चाहता हूँ कि ये विकृतियाँ जब आपके विधान में हो नहीं सकती तो उसका क्या कारण है-

1. स्वस्थ माता-पिता की संतान भी मंगोल (अविकसित मस्तिष्क) पायी जाती है।

2. अनेक बार स्वस्थ नारी का गर्भपात,

3. अत्यन्त अल्पायु में मृत्यु,

4. विकलांग सन्तान,

5. दो या अनेक शुक्राणु का दो या अधिक डिम्बाणु के भेदन से एक से अधिक सन्तान,

6. एक ही शुक्राणु का एक ही अण्डाणु के विभाजन से जुड़वा-यानी एक ही शरीर में दो सिर-एक धड़।

ये सब डिफेक्टिव प्रोडक्शन आपकी फैक्टरी का है ?

इस प्रसंग में जनसंख्या वृद्धि का उल्लेख भी समीचीन रहेगा। महर्षि दयानन्द के समय भारत की जनसंख्या लगभग 20 करोड़ थी, जो अब 130 करोड़ हो गई है। विश्व की जनसंख्या 700 करोड़ है और सन् 2050 तक 950 करोड़ हो जाने के अनुमान से विश्व के समाजशास्त्रियों की नींद हराम हो गई है। संसाधनों की कमी, विश्व में भयानक अराजकता फैला देगी। लूटपाट, हत्या, चोरी, डकैती, खून-खराबे का व्यापक स्तर पर फैलाव हो जावेगा। जनसंख्या विस्फोट और उसके संभावित परिणाम क्या कर्मफल सिद्धान्त की प्रासंगिकता में प्रश्न चिन्ह नहीं लगा देंगे ? 90 प्रतिशत वृद्धि निम्न कोटि वर्ग की ही होती है। यही स्पष्टीकरण विद्वान लोग भी देते हैं और देंगे भी। जन्म की चर्चा के लिये इतना ही पर्याप्त है अब 'मरण' की चर्चा की जावे-पौराणिकों के गरुण पुराण में अनेक नरकों में भेजे जाने का उल्लेख है। इस्लाम भी पापियों को दोजख़ में भेजे जाने का उल्लेख करता है। मैं जानना चाहता हूँ कि हमारा वैदिक धर्मियों का न्यायकारी ईश्वर भी मनुष्य शरीर में ही पाई जाने वाली यातना से क्या अधिक यातना दे सकता है ? इतनी यातनाओं की तुलना में भोग योनि-पशु-पक्षी, पेड़-पौधों में भेजा जाना किसी भी सूरत में कष्ट वाला नहीं माना जा सकता है-

1. दुनिया भर में करोड़ों व्यक्ति नारकीय जीवन जी रहे हैं। मुम्बई में, मैं उस जगह भी गया हूँ जहाँ हजारों की संख्या में नारियाँ, टाट के छाजनों में, देह व्यापार में धकेल दी गई है और उस नारकीय जीवन की जो उन्हें घृणित रोग देता हैं। वे भी प्रत्येक संध्या को 'ईश प्रार्थना' कर अधिक से अधिक 'ग्राहक' भेजने की याचना करती हैं। विश्वभर के नारी-बाजारों का यही परिदृश्य है।

2. जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने 50-60 लाख नाज़ियों पर इतने जुल्म, इस प्रकार के जुल्म ढाए कि उनका उपलब्ध विवरण भी पढ़ पाना कड़े दिल का काम है। मैंने दो बार की अमेरिका यात्रा में पढ़ने की कोशिश की पर पुस्तक पूरी नहीं पढ़ पाया।

एक लाइन में खड़ा करके गोलियों से उड़ाना, यातना ग्रह में बच्चियों, महिलाओं, और पुरुषों को जो भूख-प्यास से पूर्णतया जर्जर हो चुके थे, उनके सब कपड़े उतरवाकर गैस चैम्बरों में धकेल देना, क्या कम पीड़ादायक रहा होगा। आज भी, मध्यपूर्व के देशों में, इराक, सीरिया और अन्य मुस्लिम देशों में यही सब कुछ हो रहा है।

3. कैंसर, चिकनगुनियां, जीका वायरस से मौत क्या कम कष्टदायक है। टर्मिनल स्टेज में कैंसर रोगी को पैथेडीन (अफीम) की इतनी अधिक मात्रा दी जाती है कि उसे पीड़ा का होश भी नहीं रहे। इसी अवस्था में उसकी मृत्यु हो जाती है। ऐसी मृत्यु मैंने देखी है।

4. विश्वभर में प्रत्येक वर्ष प्रकृति की विनाशलीला यथा सुनामी, केदारनाथ त्रासदी आदि में हजारों मानव काल के करालगाल में समा जाते हैं। क्या ये मृत्यु भी आपकी न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत कर्मफल सिद्धान्त की पुष्टि में मान्य की जा सकती हैं ? जानना चाहता हूँ।

प्रभु ! आप न्यायकारी हो, नचिकेता के समान इन सभी प्रश्नों का निराकरण आपसे चाहता हूँ। कृपा करो।

उत्तर-वत्स ! पहिले अपने भारत के विद्वानों एवं संन्यासियों के पास जाओ जिन्होंने चारों वेदों का, छ: ब्राह्मणग्रंथों का दर्शन, ग्यारह मान्य उपनिषदों का अध्ययन किया है।

तथास्तु।

www.thearyasamaj.org

स्वर्ग कामो यजेत

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

स्वर्ग कामो यजेत अर्थात् जिसको स्वर्ग की कामना हो वह यज्ञ करे। इस मंत्र में आदेश स्पष्ट है और हम सभी मनुष्यों को मिल कर एक साथ यज्ञ कर्म स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष की कामना से करना चाहिए। यहां यज्ञ कर्म को स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष की प्राप्ति का साधन बताया गया। इसे पूरी तरह से समझने के लिए हमें यज्ञ और स्वर्ग दोनों शब्दों के विस्तृत यौगिक अर्थों को उनके सही स्वरूप और परिपेक्ष्य में समझना होगा। साथ ही इन दोनों शब्दों यज्ञ और स्वर्ग के बारे में फैली भ्रान्तियों को भी दूर करना होगा। तभी हम स्वर्ग कामो यजेत के आदेश को यथावत जान कर मानते हुए पालन कर पायेंगे।

प्रथम यज्ञ को समझने का प्रयास करते हैं। यज्ञ को मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म **यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म** बतलाया गया साथ ही **यज्ञो वै भुवनस्य नाभि** कहकर इस समस्त संसार का आधार माना गया। परमपिता परमेश्वर को भी यज्ञरूप प्रभो हमारे कहा गया। इनसे स्पष्ट है कि यज्ञ एक बहुत महान पुनीत श्रेष्ठतम कर्म है। परन्तु प्रश्न वहीं रह जाता है कि आखिर इतना महान कार्य यज्ञ क्या है। क्या केवल अग्निहोत्र ही यज्ञ है या अग्निहोत्र उस जीवन यज्ञ का प्रारम्भ हैं। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में यज्ञ को परिभाषित करते हुए इसकी यौगिक परिभाषा बतलाई है **''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान है और जो दूसरों के उपकार के लिए किया जाता है उसे यज्ञ कहते हैं।''** इस परिभाषा पर चिंतन करें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य द्वारा जीवन में किया गया परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। इस परिभाषा के प्रथम भाग पर चिंतन करे तो पाते हैं कि देव दयानन्द ने अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त कह कर समस्त प्रकार के वैदिक कर्मकांडों को इसमें समाहित करके और जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान लिखकर सृष्टि में होने वाली प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया को वैज्ञानिक आधार देते हुए शामिल किया और अन्त में इसे दिशा देते हुए लिखा जो दूसरों के उपकार के लिए है। इतनी बड़ी विस्तृत व्यापक और यौगिक परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। परोपकार का महत्व और इसकी पुष्टि करते हुए देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य लिखा है। ईश्वर को भी यज्ञरूप इसलिए कहा जाता है कि क्योंकि ईश्वर के सभी कार्यों सृष्टि के निर्माण पालन न्याय और संहार सभी में रहने वाले सभी प्राणियों के कल्याण और परोपकार की भावना ही निहित है और इसमें ईश्वर का स्वयं का कोई स्वार्थ नहीं है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि अग्निहोत्र जिसे नित्य कर्म बताया गया एक प्रारम्भ है अन्त नहीं। यदि हम गाड़ी की टिकट तो आनलाईन बुक करवा लें परन्तु घर से स्टेशन समय पर जाकर गाड़ी पकड़ने का पुरूषार्थ ना करें तो अपने लक्ष्य का गन्तव्य तक नहीं पहुंच पायेंगे और इस प्रकार टिकट लेना भी व्यर्थ हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार अग्निहोत्र दैनिक यज्ञ के उपरांत इसे अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में धारण करने का पुरूषार्थ करने से ही हम जीवन को यज्ञमय बना सकते है। संक्षेप में जिस प्रकार हवन कुंड में यज्ञ की अग्नि को स्थापित करते है ठीक उसी प्रकार अपने आत्मा में सत्य ज्ञान की अग्नि को उद्बुद्ध करना होगा। जिस प्रकार हम दैनिक यज्ञ से पूर्व उस स्थान प्रत्येक सामग्री और अपनी स्वयं की शारीरिक सामाजिक और आत्मिक बल शुद्धता तय करते हैं। ठीक उसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें अपने समस्त कलुषित भावनाओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि के पूर्वाग्रहों पर झाड़ू मार कर साफ करना होता है। जैसे अग्निहोत्र में हम प्रज्जवलित यज्ञ की अग्नि में घृत सिंचित समिधा दान करते हैं ठीक इसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें खुद जीवन से समस्त बुराईयों स्वार्थ को दूर करके काष्ठ से समिधा बनकर अपने सर्वस्व को अग्निस्वरूप परमपिता परमेश्वर को समर्पित करना होगा। जीवन यज्ञ करते हुए जब हम ईश्वर के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जायेंगे तो समिधा की भांति अग्निस्वरूप हो जायेंगे। ऐसा होने पर हम ना केवल मां की गोद में खेल रहे बच्चे की भांति निर्भय हो जायेंगे अपितु संसार का कोई भी दुर्गुण दुर्व्यसंन हमें परेशान नहीं कर पायेगा जैसे यज्ञ में आहूत अग्नि को समर्पित समिधा को कोई छू नहीं सकते वैसे जीवन यज्ञ में सत्य ज्ञान से प्रकाशित आत्मा में विराजमान सर्वअन्तर्यामी परमात्मा को हम संपूर्ण दुर्गुणों को त्याग समिधा बनकर पूर्णतया समर्पित कर देंगे तो कोई सांसारिक कष्ट व्यथा हमें छू भी नहीं पायेगी। इसके उपरांत जल प्रसेचन की प्रक्रिया हमें जीवन में जल से शान्ति और यज्ञाग्नि से क्रान्ति का संदेश देती है। हमारे जीवन में प्रत्येक क्रान्ति अर्थात प्रगतिशीलता उर्ध्वगामी दिशा शान्तिपूर्वक यानि समन्वयता से होनी चाहिए। अग्निहोत्र में औषधियुक्त सामग्री की आहुतियां वेद मंत्रों सहित हमें संदेश देती है कि जीवन यज्ञ में हमारा प्रत्येक कार्य ईश्वरीय आज्ञा का यथावत पालन करते हुए परोपकार की दृष्टि से करेंगे तो निश्चित रूप से हम अपने जीवन को यज्ञमय बनाने में सफल हो जायेंगे।

हमारे जीवन के यज्ञमय बनते ही हमारा प्रत्येक कार्य सामाजिक सर्वहितकारी होने के कारण ईश्वरीय न्यायव्यवस्था में कर्मफल सिद्धान्त के अनुरूप वांछित सुख विशेष अर्थात् स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हो जायेंगे। यह स्वर्ग जीवन के उपरांत मृत्यु के बाद किसी सातवें लोक की परिकल्पना नहीं होगी। अपितु मिलकर संगतिकरण से परोपकार के यज्ञीय कार्यों के संपादन से हमारा जीवन परिवार, समाज और राष्ट्र स्वर्ग बन जाएगा जिसमें सभी को वांछित सुख विशेष प्राप्त होंगे। क्योंकि स्वर्ग मृत्यु के उपरान्त किसी लोक की कल्पना नहीं है अपितु अपने परिवार समाज, राष्ट्र में सभी को सुख विशेष देकर इसे ही अपने जीवन में स्वर्ग बनाने की अवधारणा है इसलिए यह यज्ञ परोपकार के सामाजिक सर्वहित-कारी कार्य हम सभी को एक साथ मिलकर यज्ञ के अवयव संगति-करण करते हुए करने चाहिए।

आर्य समाज जीरा में लोहड़ी व मकर संक्रांति पर्व मनाया गया

आर्य समाज जीरा में दिनांक 13-01-2017 तथा 14-01-2017 दिन शुक्रवार और शनिवार को लोहड़ी और मकर संक्रांति पर्व बड़ी ही धूमधाम व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम हवन-यज्ञ पं० किशोर कुणाल शास्त्री जी ने बड़ी ही विधिपूर्वक करवाया। दोनों दिन-पाँच-पाँच यजमान जोड़ों ने बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति के साथ यजमान पद को अलंकृत किया। जिसमें प्रथम दिन मुख्य यजमान के रूप में इस समाज के प्रधान बड़े ही कर्मठशील और सादा-जीवन उच्च विचार के धनी श्री सुभाषचन्द्र आर्य जी सपत्नी यजमान बने। इस समाज के मंत्री श्री सुनिल कुमार आर्य सपत्नी, सुशील मल्होत्रा सपत्नी, मोतीलाल बांसल जी के सुपुत्र सोनू जी सपत्नी तथा सुदामा आर्य सपत्नी आर्य सज्जनों ने यजमान बनकर समाज का गौरव-गरिमा बढ़ाया और अपने अंत: करण को शुद्ध किया। ऐसे ही दूसरे दिन भी मुख्य यजमान समाज के मंत्री सुशील कुमार आर्य जी तथा अन्य यजमान क्रमश: प्रमोद मल्होत्रा, डॉ० रमण अग्रवाल कोटि इसे खाँ एम० डी०, अशोक पालता एस० डी० ओ० (जीरा) से, सुभाषचन्द्र आर्य प्रधान जी तथा सागर कुमार आर्य यजमान पद को सुशोभित किए। दोनों दिन मंदिर का प्रांगण आर्य माताओं, बहनों, तथा बच्चों से भरा हुआ था। पर्व के बारे में समाज के पुरोहित जी ने कहा कि-'पर्व' का अर्थ पवित्र-पावन मन से विशेष रूप से खुशियाँ प्रकट करना होता है। अन्त में समाज के प्रधान जी ने भी सभी आर्य सज्जनों की बधाईयाँ दीं और मूँगफलियाँ, रेवड़ियाँ बाँटी गई। शांति पाठ के साथ सत्संग की समाप्ति की गई।

-सुनील कुमार आर्य मंत्री आर्य समाज जीरा

www.thearyasamaj.org

शोक समाचार

आर्य समाज जीरा के पूर्व प्रधान श्री ओम प्रकाश ग्रोवर जी का दिनांक 14-01-2017 दिन शनिवार के शाम को देहावसान हो गया। वे चोट लगने के कारण पाँच-छह माह से बीमार चले आ रहे थे। वे 85 वर्ष के थे। उनका अन्त्येष्ठि संस्कार पूरी वैदिक रीति से आर्य समाज मंदिर जीरा के पुरोहित पं० श्री किशोर कुणाल शास्त्री जी ने दिनांक 15-01-2017 को दोपहर ग्यारह बजे करवाया। सबसे पहले पंडित जी ने सुबह आर्य समाज मंदिर में 8 बजे वृहदयज्ञ करवाया और उनकी आत्मिक शांति के लिए प्रार्थना की और एक मिनट का मौन रखवाया। उसके बाद आर्यसमाज मंदिर जीरा के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी ने भी शोक व दुख व्यक्त करते हुए कहा कि ओम प्रकाश ग्रोवर जी सच्चे-सच्चे पक्के आर्यसमाजी थे। उनके चले जाने का गम हमें सताता ही रहेगा। भगवान उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। उसके बाद शाम चार बजे स्व० ग्रोवर जी के घर में वृहदयज्ञ पंडित जी ने करवाया जिसमें प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी भी उपस्थित थे।

-सुनिल कुमार आर्य मंत्री आर्य समाज जीरा।

दयानन्द पब्लिक स्कूल में लोहड़ी का त्योहार मनाया गया

बृहस्पतिवार 12-01-17 को दयानन्द पब्लिक स्कूल में लोहड़ी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कक्षा पहली से छठी तक के बच्चों के बीच पतंग बनाने की प्रतियोगिता कराई गई और कक्षा साँतवी से कक्षा दसवीं तक पतंग उड़ान की प्रतियोगिता कराई गई जिसमें बच्चों ने बड़े जोर शोर से हिस्सा लिया। विजयी बच्चों को प्रिंसीपल मैडम और वाइस प्रिंसिपल मैडम द्वारा सम्मानित किया गया। पंजाबी गीतों पर सभी बच्चों और अध्यापिकाओं ने भागड़ा डाला और गीत गाए। सभी बच्चों और अध्यापिकाओं ने लोहड़ी जलाई और मूँगफली, रेवड़ी का प्रशाद सभी को बाँटा गया सभी बहुत खुश थे।

मकर संक्रान्ति के दिन पण्डित रमेश शास्त्री जी के द्वारा हवन-यज्ञ कराया गया। सभी बच्चों और अध्यापिकाओं ने हवन में आहुतियाँ डाली। स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार जी ने सभी बच्चों को प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए सम्मानित किया और सभी बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। हवन यज्ञ की समाप्ति के पश्चात यज्ञ शेष बांट्य गया।

-प्रिंसीपल दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना,

प्रिंसीपल एवं पुरोहित चाहिए

आर्य सी सै स्कूल एवं आर्य समाज मानसा में उपरोक्त पद रिक्त है। जिसके लिए योग्य उमीदवारों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते है। इच्छुक उम्मीदवार अपनी योग्यतायें एवं पहचान संबधी प्रमाण पत्र संलग्न करके अपने प्रार्थना पत्र मंत्री, आर्य समाज सभा, आर्य समाज गली मानसा-(पंजाब) के पते पर भेजें। उचित वेतन एवं निवास का प्रबंध किया जायेगा।

-प्रधान आर्य समाज मानसा

गुरुकुल आश्रम आमसेना का ५०वाँ वार्षिक महोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ओड़िशा में आर्यों के तीर्थस्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना का ५० वाँ वार्षिक महोत्सव माघ, कृष्ण, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या तद्नुसार ११,१२,१३, फरवरी २०१७ को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस शुभावसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के अनेक विद्वान् तथा राजनेता पधार रहे है। सभी गुरुकुल प्रेमी एवं श्रद्धालु अधिक से अधिक संख्या में पधार कर महोत्सव की शोभा बढ़ाएँ

वैदिक पुरोहित की आवश्यकता है

सम्पूर्ण वैदिक संस्कारों हेतु विद्वान, गृहस्थी पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।

मो० 9358697035

आर्य समाज मन्दिर खलासी लाईन, सहारनपुर

मन्त्री

पृष्ठ 4 का शेष-स्वामी दयानन्द सरस्वती

आइन्सटीन ने 1910 ई. में कहा। इसी प्रकार स्वामी जी ने यजुर्वेद 23. 48 में उर्जा के विषय में लिखा कि उर्जा में मात्रा (भार) नहीं होता। मन्त्र इस प्रकार है-

ब्रह्म सूर्य सम ज्योति द्यौः समुद्र सरँसरः।

इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते। (यजु. 23.48)

इससे पूर्व के मन्त्र में जो प्रश्न पूछे गये थे उनके उत्तर इस मन्त्र में दिये गये है। एक प्रश्न था कि वह कौन सी वस्तु है। जिसमें मात्रा न हीं होती और उत्तर में कहा गया है कि ध्वनि में मात्रा नहीं होती है।

सब कार्यों के साथ देश की स्वतंत्रता का कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड पढ़ने को भेजा गया परन्तु उनको मुख्य काम दिया गया। विदेशों में भारत की स्वतंत्रता के लिये समर्थन जुटाना। उन्होंने अपने कार्य को तत्परता से प्रारम्भ कर दिया। लोकतंत्र में शासन कैसा होता है इसकी पूरी रूप रेखा सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में रख दी गई। आठवें समुल्लास में देशी लोकतन्त्र की विदेशी राज्य से श्रेष्ठता घोषित की गई। दसवें समुल्सास में पराधीनता का कारण बताया गया तथा भारत की पूर्व महानता का एक चित्र भी उपस्थित किया। फिर यजुर्वेद अध्याय 9 मंत्र 17.21 में लोगों से परकीय राज्य को नकार देने को कहा गया। मंत्र 17 के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं-जो ये राजपुरूष हम लोगों से कर लेते हैं वे हमारी निरन्तर रक्षा करें नहीं तो न लें और हम भी उनको कर न देवें। प्रजा की रक्षा और दुष्टों के साथ युद्ध करने के लिए ही कर देना चाहिये अन्य किसी प्रयोजन के लिए नहीं यह निश्चित है। तथा मंत्र 21 के भावार्थ में वे लिखते हैं-मैं ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता हूँ कि तुम लोग मेरे तुल्य धर्म युक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले पुरूष ही की प्रजा हो और अन्य किसी क्षुद्राशन की प्रजा होना स्वीकार कभी मत करो।

स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा कि प्रथम सृष्टि तिब्बत में हुई और जब आर्य और दस्युओं में अर्थात् विद्वान् जो देव अविद्वान जो असुर, उन में सदा लड़ाई बखेड़ा हुआ किया, जब बहुत उपद्रव हुआ तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जान कर यहीं आकर बसे। इसी से इस देश का नाम आर्यावर्त हुआ। इससे पूर्व इस देश का कोई नाम नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सीधे इसी देश में आकर बसे थे।

स्वामी जी के विचारों की गूंज यूरोप और अमेरिका तक पहुँची। फलस्वरूप स्वामी दयानन्द ही प्रथम भारतीय पुरूष हैं जिनको थियोसोफिकल सोसाइटी का अध्यक्ष बनाया गया। प्रो. मैक्स मूलर जो कहते थे कि वेदों का प्रादुर्भाव ईसा से 1200 से 1350 ई. पूर्व हुआ उन्होंने अपने विचारों को बदलकर India what can it teach us में कहा कि कोई भी व्यक्ति नहीं बता सकता है कि वेदों का प्रादुर्भाव कब हुआ ? इसी तरह मध्य एशिया को आर्यो की मूल उत्पत्ति स्थली मानने से हट कर उन्हें लिखना पड़ा कि जैसे मैंने पूर्व में कहा है वैसे ही पुनः कहता हूँ कि आर्यों का मूल निवास स्थान एशिया की भूमि में ही कहीं है। तिब्बत भी एशिया में ही है।

स्वामी जी ने मृत प्रायः हिन्दू जाति में प्राण फूंके और उनमें आत्मा गौरव की भावना भरी। उन्होंने समाज में व्याप्त स्पर्शास्पर्श का विरोध कर मनुष्य मात्र में समानता का प्रचार किया।

समाज सदैव अपने बड़े सम्मानित व्यक्तियों को आदर्श मानकर उनका अनुसरण करता है, इसलिए स्वामी जी ने कुछ राजाओं पर भी प्रभाव डालकर इस कार्य में सहयोग की कामना की। देश के दुर्भाग्य से स्वामी जी अधिक समय जीवित रहकर अपने कार्य को विस्तार न दे पाये उन्हें 59 वर्ष की आयु में ही विष देकर देवलोक भेज दिया गया परन्तु बाद में उनके शिष्यों ने गुरू के कार्य को आगे बढ़ाया। देश की स्वाधीनता और विकास में आर्य समाज निरन्तर प्रयत्नशील रहा और परिणाम स्वरूप आज हमारा देश संसार के प्रमुख देशों में अपना स्थान प्राप्त कर सका है।

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी

प्रभु की शरण में यश और सुख

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन् अमृक्तम्।
नामानि चित् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ॥

-ऋ ६।१।४

ऋषिः-भारद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता-अग्निः॥ छन्दः-निचृत्त्रिष्टुप्॥

विनय-हे देव ! हमने तुम्हारे पद के, तुम्हारे प्राप्तव्य-स्वरूप के, तुम्हारे चरणों के दर्शन पाये हैं। तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हुए, तुम्हारी स्तुति करते हुए, तुम्हारे आगे झुकते हुए, भक्तिभाव से आत्म-समर्पण करते हुए ही हमें तुम्हारे दुर्लभ पद के दर्शन मिले हैं। यह सब तुम्हारी भक्ति की महिमा है। इसके साथ ही मेरी पुरानी यश पाने की इच्छा भी तृप्त हो गई है। तुम्हारी कृपा से ऐसा यश मिला है जोकि मृदित नहीं हो सकता। बाहर के मनुष्यों से मिलने वाला यश तो उनके अधीन होता है, वह मृदित होता रहता है, परन्तु तुम्हारे पद-दर्शन से जो अन्दर का यश मिला है वह अक्षय है, उसे पाकर अब मुझे किसी बाह्य यश की आकांक्षा नहीं रही है। तेरे सेवकों को संसार में सज्जन पुरुषों द्वारा भी बहुत-सा यश मिला करता है, पर वह भी तुझ द्वारा मिले इस आन्तर-यश की ही छाया होती है। हे अग्निदेव ! तेरी भक्ति ने मुझे उबार दिया है। तेरी भक्ति का तो इतना प्रताप है कि यदि कोई तेरे यज्ञार्थ (यज्ञ में उच्चारणीय) पवित्र पुण्य नामों को ही केवल धारण करे, उन्हें वाणी से बोलता हुआ भक्ति से हृदय में गुँजाता रहे, तो इस नाम-जपन, नाम-धारण से ही उसका अन्तःकरण इतना शुद्ध हो जाएगा कि उस पर तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि हो जाएगी। तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि में रहता हुआ वह सुख से आगे बढ़ता जाएगा, उसके व्याधि, स्त्यान आदि विघ्न हरण होते जाएँगे, वह निर्विघ्न सुख से उन्नत होता जाएगा।

तो क्या, हे अग्ने ! हम तेरे पवित्र नामों को भी धारण न कर सकेंगे ? यह तो कम-से-कम है जो हमें तुम्हारी ओर पहुँचने के लिए करना चाहिए। हमें तो तुम्हारे प्रेम के मार्ग में अन्त तक जाना है और एक दिन यह कह सकने योग्य होना है "हमने तेरे पद के दर्शन पा लिये हैं और अनश्वर यश के भागी हो गये हैं।"

वर चाहिए

२४ वर्ष, ५'३" शिवहरे (वैश्य) बी एस सी (गणित), बी. एड, सी टी ई टी, गेहुँआ वर्ण, सुंदर सौम्य सरल धार्मिक, शासकीय हाई स्कूल जिला बाँदा (उत्तर प्रदेश) में कार्यरत बुंदेलखंड निवासी आर्यसमाजी परिवार की शिक्षिका वेतन ४८०००/- प्रतिमाह के लिए योग्य वर के प्रस्ताव आमंत्रित (जाति बंधन नहीं)

संपर्क : मोबाइल ०८११५९३९४३५.

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना

(पंजाब) दूरभाष : 91-9814629410

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना-पत्र 2017-2018

छठी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2015 तक गुरुकुल के कार्यलय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते है।)

* कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 02 अप्रैल 2017 दिन रविवार को प्रात: 8:00 बजे होगी।

* सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-मंगत राम मेहता, (कुलपति)

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।